के वि वि आयोग
CERC

सौदामिनी

अक्टूबर – दिसम्बर, 2017 | केन्द्रीय विद्युत विनियामक आयोग | खण्ड–I अंक–15

‘राष्ट्रीय एकता दिवस’ के उपलक्ष्य में प्रतिज्ञा वाचन का आयोजन

केन्द्रीय विद्युत विनियामक आयोग में सरदार वल्लभभाई पटेल के जन्मदिवस का "राष्ट्रीय एकता दिवस" के रूप में अनुपालन के लिए दिनांक 31.10.2017 प्रातः 11.00 बजे राष्ट्रीय एकता दिवस शपथ ग्रहण का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आयोग के वरिष्ठ अधिकारियों सहित समस्त स्टाफ ने सामूहिक रूप से "राष्ट्रीय एकता दिवस शपथ" ग्रहण की। शपथ ग्रहण करने के पश्चात लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की दूरदर्शिता और उनके राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करने के महत्वपूर्ण कार्यों को रेखांकित किया गया। इस अवसर पर सभी स्तर के स्टाफ ने राष्ट्रीय एकता के लिए किए गए उनके अमूल्य योगदान पर चर्चा की और उनकी प्रासंगिकता को निर्विवाद रूप से स्वीकार किया।

प्रतिज्ञा वाचन करते हुए वरिष्ठ अधिकारीगण

संविधान दिवस – 26 नवम्बर, 2017 के उपलक्ष्य में प्रतिज्ञा वाचन का आयोजन

संविधान के जनक डॉ. बी. आर. अम्बेडकर की 127वीं जयन्ती के अवसर पर संविधान दिवस – 26 नवम्बर के उपलक्ष में केविविआ, कार्यालय में 27 नवम्बर, 2017 को सामूहिक प्रतिज्ञा ली गई। ‘संविधान दिवस’ के इस महत्वपूर्ण आयोजन पर डॉ. बी. आर. अम्बेडकर की दूरदृष्टि, समानता एवं विश्वबंधुत्व की महान परिकल्पनाओं का स्मरण किया गया। भारत के संविधान के प्रति अगाध निष्ठा एवं इसके अनुपालन को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से आयोग के सदस्यगण, सचिव तथा वरिष्ठ अधिकारियों सहित सभी स्तर के स्टाफ सदस्यों ने प्रतिज्ञा का वाचन किया।

प्रतिज्ञा वाचन करते हुए वरिष्ठ अधिकारीगण एवं समस्त स्टाफ

सौदामिनी

के वि वि आयोग
CERC

अक्टूबर – दिसम्बर, 2017 केन्द्रीय विद्युत विनियामक आयोग खण्ड–I अंक–15

श्री गिरीश भा. प्रधान, अध्यक्ष का कार्यकाल पूरा होने पर उन्हें भावभीनी विदाई

श्री गिरीश भास्कर प्रधान ने केविविआ में अध्यक्ष के पद पर दिनांक 20.10.2013 को कार्यभार ग्रहण किया था दिनांक 19.12.2017 को अपना कार्यकाल पूरा होने पर उन्हें समस्त स्तर के स्टाफ सदस्यों द्वारा भावभीनी विदाई दी गई। इस अवसर पर आयोग के सदस्यगण, सचिव और सभी वरिष्ठ अधिकारियों ने उनकी उत्कृष्ट कार्यशैली और बेहतर कार्य निश्पादन की प्रशंसा की। आयोग के सभी सदस्यों ने उनके सुखद भविष्य के लिए शुभकामनाएं दी।

इस अवसर पर समस्त प्रभागों के प्रमुखों एवं विभिन्न स्तर के स्टाफ सदस्यों ने उनके साथ कार्य के दौरान बिताए अविस्मरणीय क्षणों को सांझा किया। अंत में श्री गिरीश भास्कर प्रधान, अध्यक्ष ने अपने कार्यकाल के दौरान सभी सदस्यगण, सचिव व वरिष्ठ अधिकारियों तथा समस्त स्टाफ के प्रति अपने हार्दिक उद्‌गार व्यक्त किए। इसके साथ अध्यक्ष महोदय ने समस्त सदस्यों को उनके सहयोग व आत्मीय व्यवहार के लिए धन्यवाद दिया।

विदाई समारोह में अध्यक्ष महोदय को स्मृति चिन्ह भी भेंट किया गया। इस विदाई समारोह का संचालन डॉ. एस.के. चटर्जी, संयुक्त प्रमुख (वि.मा.) द्वारा किया गया।

श्री गिरीश भास्कर प्रधान, अध्यक्ष को भावभीनी विदाई : कुछ झलकियां

सौदामिनी

के वि वि आयोग
CERC

अक्टूबर – दिसम्बर, 2017 केन्द्रीय विद्युत विनियामक आयोग खण्ड–I अंक–15

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक–15 दिसंबर 2017

दिसंबर, 2017 को समाप्त राजभाषा कार्यान्वयन की समिति की तिमाही बैठक दिनांक 15.12.2017 को आयोग के सचिव एवं अध्यक्ष राजभाषा कार्यान्वयन समिति श्री सनोज कुमार झा की अध्यक्षता में आयोजित की गई। अध्यक्ष महोदय ने अलग–अलग प्रभागों के प्रभारी से हिन्दी प्रगति की जानकारी प्राप्त की। बैठक में हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के सफल आयोजन के लिए सराहना करते हुए इस बात पर बल दिया गया कि समस्त कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार करते हुए हिन्दी की सरलता, लोकप्रियता व व्यवहारिकता को केन्द्र में रखा जाए। इसके साथ ही विभागीय प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत श्रेष्ठ कार्य नि पादन के लिए सभी स्टाफ सदस्यों को प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न योजनाओं पर भी विस्तार से विचार–विमर्श किया गया। इस बैठक में समिति के समस्त सदस्यों ने सहभागिता की।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक के दौरान विचार विमर्श

विद्युत मंत्रालय द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन संबंधित निरीक्षण

विद्युत मंत्रालय द्वारा केन्द्रीय विद्युत विनियामक आयोग में राजभाषा कार्यान्वयन संबंधित निरीक्षण दिनांक 23 नवंबर, 2017 को सफलतापूर्वक संपन्न किया गया। विद्युत मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारियों को राजभाषा प्रगति से संबंधित रिकार्ड उपलब्ध करवाए गए एवं उन्हें तिमाही/वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट भी प्रस्तुत की गई। विद्युत मंत्रालय के अधिकारियों ने राजभाषा प्रगति के प्रति संतोष व्यक्त किया और कुछ बिंदुओं पर बहुमूल्य सुझाव भी दिए।

विद्युत मंत्रालय के अधिकारियों द्वारा निरीक्षण के दौरान विचार–विमश

'सांप्रदायिक सद्भावना' या 'कौमी एकता सप्ताह' 19–25 नवंबर

केन्द्रीय विद्युत विनियामक आयोग में 'सांप्रदायिक सद्भावना' 'कौमी एकता सप्ताह' 19–25 नवंबर आयोजित किया गया। इस सप्ताह के दौरान सभी स्टाफ सदस्यों में सांप्रदायिक सद्भावना के महत्व को बढ़ाने के उद्देश्य से 'सांप्रदायिक सद्भावना' या 'कौमी एकता' विषय पर निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्राप्त हुई श्रेष्ठ दो प्रविष्टियों का पुरस्कार के लिए चयन किया गया।

सौदामिनी

के वि वि आयोग
CERC

अक्टूबर – दिसम्बर, 2017 | केन्द्रीय विद्युत विनियामक आयोग | खण्ड–I अंक–15

चिन्ता नकार है तो चिन्तन साकार है

चिन्तनपरक लेख

इस तथ्य से इंकार नहीं किया जा सकता कि चिन्ता व्यक्ति के जीवन में इस तरह घुली मिली होती है कि इससे कभी भी पूर्णतया मुक्त नहीं हुआ जा सकता। इसे यूं भी कहा जा सकता है कि चिन्ता मनुष्य जीवन की वह सहज स्वाभाविक वृत्ति है जो प्रत्येक व्यक्ति को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में हमेशा प्रभावित करती है। आवश्यकता चिन्ता के मूल कारणों को गहराई से विवेचित विश्लेषित करते हुये उसे चिन्तन में बदलने की है। यह एक सच्चाई है कि चिंता उस सीमा तक सही व सकारात्मक है जिस सीमा तक उससे हमें अपने लक्ष्य व कर्त्तव्य के लिए प्रेरणा मिलती है। यह चिन्ता ही होती है जो हमें अपने लक्ष्य निर्धारण व उसे पाने के लिए सजग करती है और कार्य के लिए तत्पर करती है। लेकिन यही चिन्ता का भाव अज्ञान व आत्मविभवास की कमी के कारण व्यक्ति को संशय व अंतर्द्वन्द्व की ओर धकेल दे तो यही चिन्ता रोग बनकर व्यक्ति की समूची चेतना को जड़ व कुंद बना देती है। मनोवैज्ञानिकों ने अपने अधुनातन शोधों से यह तथ्य उजागर किया है कि व्यक्ति की अधिकांश समस्याएं काल्पनिक होती हैं जिनका वास्तविकता से कोई लेना देना नहीं होता। कितनी विडंबना है कि व्यक्ति अविश्वास, संयम, संशय, अनिर्णय के कारण इतना चिन्तित रहने लगता है कि उसकी सारी ऊर्जा उहापोह में ही नष्ट हो जाती है।

किसी महापुरुष का कथन है कि नकारात्मक विचार एवं वृत्तियां तभी तक हमें प्रभावित करती हैं जब तक हम उसे अपने सकारात्मक विचारों से अधिक महत्व देते हैं। आवश्यकता केवल इस बात की है कि अपनी व्यर्थ की उलजुलूल व निरर्थक चिन्ताओं–आशंकाओं को सम्यक चिन्तन में परिवर्तित करें। इस तथ्य या प्रवृत्ति को हम इस तरह भी समझ सकते हैं कि चिन्ता के मूल कारणों जैसे वैयक्तिक लाभ–हानि, स्व–हित की पूर्ति या महत्वाकांक्षा को व्यापक जागतिक समस्याओं से जोड़कर देखने की दृष्टि विकसित करें। अज्ञान और आत्मविश्वास की कमी को दूर करने के लिए अकर्मण्यता व निष्क्रियता से बचें और स्वाध्याय, परिश्रम, निष्ठा व एकाग्रता से समुचित चिन्तन मनन करते हुए अपने जीवन दर्शन को ठोस व निश्चित दिशा प्रदान करें। चिन्ता निरर्थक सोच विचार व अस्पष्ट काल्पनिक आशंकाओं से उपजती है और स्पष्ट दिशा बोध के अभाव में हमारी क्षमताओं और संभावनाओं का नाश करती है जबकि वस्तुपरक एवं तर्क संगत विश्लेषण से हम न केवल चिन्ता के आत्मघाती घेरे से मुक्त हो जाते हैं बल्कि उसी व्यर्थ होती ऊर्जा का रचनात्मक कार्यों में बखूबी इस्तेमाल भी कर सकते हैं।

सम्यक एवं वैज्ञानिक चिन्तन मनन में ही इतनी शक्ति विद्यमान है कि वह हमें व्यक्तिगत संकीर्णताओं, क्षुद्रताओं और स्वार्थपरताओं से ऊपर उठा देती है और भावी परिणामों की चिन्ता से मुक्त करते हुये अपने कर्त्तव्य व कर्म के प्रति निष्ठावान बनाती है। चूंकि चिन्तन का आधार धर्म–दर्शन व अध्यात्म की ठोस एवं विचारपूर्ण अवधारणाएं होती है इसलिए हम भविष्य की चिन्ता में घुलने के बजाय वर्तमान का सही उपयोग करना सीखते हैं। चिन्ता चूंकि हमें अपनी आंतरिक शक्तियों के प्रयोग से वंचित करते हुए अपने से बाहर ले जाती है इसलिए नकारात्मक है जबकि चिन्तन मनन हमें अपनी असीम क्षमताओं से परिचय करवाता है और कठिनाइयों व समस्याओं से जूझने की ताकत देता है इसलिए सकारात्मक है। यह भी सर्वमान्य तथ्य है कि हमारा शारीरिक–मानसिक स्वास्थ्य काम करने से नहीं बल्कि चिन्ता करने से खराब होता है। यह आत्म चिंतन की ही सत्ता एवं अर्थवत्ता है कि हम समझ जाते हैं कि परिणाम को निर्धारित करने वाले घटकों पर जब हमारा कोई नियंत्रण ही नहीं तो हम प्रकृति व नियति के चक्र में अनावश्यक हस्तक्षेप आखिर किस प्रकार कर सकते हैं। यह चिन्तन की ही महत्ता एवं सार्थकता है कि हम चिन्ता के मूल कारणों को जानने समझने की दृष्टि विकसित करते हैं और उससे मुक्त होने का प्रयास करते हैं।

धर्म, दर्शन, अध्यात्म एवं वैज्ञानिक मान्यताओं से जुड़ा चिन्तन हमारी कार्यकुशलता व कार्यक्षमताओं को उभारता है और हममें स्फूर्ति, उत्साह, उमंग व प्रसन्नता का भाव उत्पन्न करता है। चिन्ता जहां बनते काम बिगाड़ देती है वहीं संतुलित व व्यापक दृष्टिकोण से उत्पन्न चिन्तन बिगड़े काम को ठीक करने की अद्भुत शक्ति रखता है। चिन्तन के माध्यम से हममें आत्म–साक्षात्कार व आत्म निरीक्षण की प्रवृत्ति जन्म लेती है और हम अति महत्वाकांक्षा की भूल भुलैया से निकल कर अपने बारे में संतुलित एवं संयमित नजरिया विकसित करते हैं। किसी भी अनचाही या अप्रिय स्थिति को जीवन की अनिवार्यता का हिस्सा मानकर चिन्ता का आत्मघाती रूप अपनाने के बजाय अपने चिन्तन से छुटकारा पाना ही लाभकारी है।

(डॉ. राजेन्द्र सहगल)
राजभाषा अधिकारी

संरक्षक
ए.के.सिंघल
सदस्य

www.cercind.gov.in

संपादक मंडल
सनोज कुमार झा, सचिव
पी. राममूर्ति, सहायक सचिव
कमल किशोर, सहायक प्रमुख
राजेन्द्र सहगल, राजभाषा अधिकारी

कृपया इस पते पर अपनी प्रतिक्रिया भेजें :
केन्द्रीय विद्युत विनियामक आयोग
भूतल, चन्द्रलोक बिल्डिंग, 36 जनपथ,
नई दिल्ली–110001
Email : info@cercind.gov.in